ब्रह्मचारिणी माता की कथा PDF

यह देवी अपने पिछले जन्म में हिमालय के घर कन्या रूप में उत्पन्न हुई थी और नारदजी की सलाह से भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। इस कठिन तपस्या के कारण इनका नाम तपश्चारिणी अर्थात ब्रह्मचारिणी रखा गया। एक हजार वर्ष तक उन्होंने केवल फल–फूल खाकर गुजारे और सौ वर्ष तक केवल जमीन पर रहकर साग–सब्जी खाकर गुजारा किया।

उन्होंने कुछ दिनों तक कठोर उपवास रखा और वर्षा तथा धूप में खुले आकाश के नीचे घोर कष्ट सहे। तीन हजार वर्षों तक उसने टूटे हुए बिल्व पत्र खाए और भगवान शंकर की पूजा की। इसके बाद उन्होंने सूखे बिल्व पत्र खाना भी बंद कर दिया। कई हजार वर्षों तक निर्जल रहकर व्रत–उपवास करके वे तपस्या करती रहीं। पत्ते खाना छोड़ देने के कारण इनका नाम अपर्णा पड़ा।

कठिन तपस्या के कारण देवी का शरीर बिल्कुल क्षीण हो गया। देवताओं, ऋषियों, सिद्धगणों, मुनियों सभी ने ब्रह्मचारिणी की तपस्या को एक अभूतपूर्व पुण्य कार्य बताया, प्रशंसा की और कहा, "हे देवी आज तक कोई ऐसी कठोर तपस्या नहीं कर पाया यह केवल आपने किया है आपकी हर एक मनोकामना पूरी होगी और भगवान शिव का चंद्रमौली रूप आपको पति के रूप में प्राप्त होगा।अब तपस्या छोड़ो और घर लौट जाओ।शीघ्र ही तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आ रहे हैं।

pdfinbox.com